पहला अध्याय

पारिभाषिक शब्द : परिभाषा, स्वरूप एवं निर्माण

१.१ पारिभाषिक शब्दावली

भाषा सार्थक शब्दों की एक सुगठित एवं व्यवस्थित इकाई है । शब्दों के सार्थक प्रयोग पर ही भाषा की अभिव्यक्ति संभव होती है । भाषा की लघुतम स्वतंत्र सार्थक इकाई को शब्द कहते हैं । सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त शब्द सामान्य शब्द कहलाते हैं । ज्ञान विज्ञान के हर क्षेत्रों के विषय विवेचन के लिए सामान्य शब्द अपर्याप्त होती है, इसलिए इन क्षेत्रों के विवेचन विश्लेषण के लिए विशेष शब्द का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है । जो शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त न होकर ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विषय एवं संदर्भ के अनुसार विशिष्ट किन्तु निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं । इस प्रकार के विशेष शब्दों के समूह को पारिभाषिक शब्दावली कही जाती है । पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की दिशा में एक शताब्दी पहले ही कोशिश शुरू हो गई थी । किसी भी स्वतंत्र देश की उसकी निजी भाषा के लिए पारिभाषिक शब्दावली महत्वपूर्ण होती है ।

१.१.१ पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता

ज्ञान-विज्ञान की परिधि का निरन्तर विस्तार होता रहता है । इन क्षेत्रों के अनुसंधान के बाद उसकी उपलब्धि को भाषा में व्यक्त करने के लिए प्राप्य शब्दों का संगठन या नवीन शब्दों की रचना करनी पड़ती है । किसी प्राचीन ऋषि ने कहा है – 'शब्दाभावें निरुक्तादय' अर्थात् जब किसी नव वस्तु, घटना या विचार के लिए शब्द का अभाव रहे, तो

निरुक्त पद्धति के आधार पर नवीन शब्द रचना कर ली जानी चाहिए । हर भाषा के लिए पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता है । सूचना प्रौद्योगिकी और जन संचार माध्यमों में पारिभाषिक शब्दावली के अभाव में कार्य चलाना कठिन है । आज तकनीकी संस्थाओं में शब्दावली का निर्माण हो रहा है । यह अच्छी बात ही है । इससे शब्दावली की कमी दूर हो जायेगी । यह ज़रूरी है कि भारतीय भाषाओं की विशेषकर राष्ट्रभाषा हिन्दी की अपनी पारिभाषिक शब्दावली हों, जिसमें हम अपने संचित एवं संकलित ज्ञान को लिपिबद्ध कर सके । डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते हैं कि "विभिन्न शास्त्रीय विषयों की अभिव्यक्ति के लिए पारिभाषिक शब्द बड़े ही महत्वपूर्ण होते हैं । शास्त्रीय विषयों में यह बहुत आवश्यक होता है कि वक्ता या लेखक जो कहना या लिखना चाहे, श्रोता या पाठक तक वह बात ठीक उसी रूप में बिना अर्थ-विस्तार या अर्थ-संकोच के स्पष्ट एवं असंदिग्ध रूप में पहुँच जाय ।"[1] अर्थात् भाषा की संपन्नता में भी पारिभाषिक शब्दावली विशेष महत्व रखते हैं ।

ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर चिन्तन और अनुसन्धान हो रहा है । इससे नई-नई संकल्पनाएँ विकसित होती है और नए नए सिद्धांत पुष्ट होते हैं । इन संकल्पनाओं और सिद्धांतों की सही अभिव्यक्ति के लिए ऐसी शब्दावलियों की नितान्त आवश्यकता होती है ताकि विषय के विशेषज्ञों को परस्पर विचार विमर्श करने में सुविधा हो । किसी भी विषय की प्रगति और विकास के लिए विषय के अनुरूप शब्दावलियों की आवश्यकता होती है । विशिष्ट शब्दावलियों की आवश्यकता इसलिए भी पड़ती है कि एक ही विषय का अध्ययन करने वाले विभिन्न लोगों के लिए एक ही शब्द के विभिन्न अर्थ न हो जाए । किसी भी भाषा के लिए

---

1. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी – पृ. २१७

पारिभाषिक शब्दावली का बडा महत्व है । डॉ. माई दयाल जैन कहते है कि "किसी भी भाषा के लिए शब्दावली का स्थान पहला है साहित्य का दूसरा । संभवतः इसीलिए वे यह भी स्वीकारते हैं कि हिन्दी और दूसरी भाषाओं में वैज्ञानिक तथा शिल्प विज्ञान संबन्धी उच्च कोटि का साहित्य और उस साहित्य के लिए उपयुक्त पारिभाषिक शब्दावली तैयार करने का काम अत्यन्त आवश्यक है ।"[1]

१.१.२ सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द

शब्द विज्ञान ने शब्द समूहों के जितने वर्गीकरण किये हैं उनमें प्रयोगवत्ता के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली की विशिष्ट अस्मिता है । सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द का यदि विश्लेषण किया जाय तो सामान्य शब्द में यथार्थ वस्तु और उसकी संकल्पना अनिश्चित रहती है । उनमें लचीलापन होता है और संदिग्धता भी हो सकती है । इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, भौगोलिक आदि परिवेशों के कारण कई अर्थ निकाले जाते हैं, किन्तु पारिभाषिक शब्द में संकल्पना और यथार्थ वस्तु निश्चित होती है । उनमें स्पष्टता होती है और वे स्वयं सिद्ध होती हैं । ये अपनी अर्थ-परिधि से न तो अधिक अर्थ व्यक्त करते हैं और न ही कम । इनमें न तो अतिव्याप्ति दोष होता है और न ही अव्याप्ति दोष । इसके अतिरिक्त एक ही विज्ञान या शास्त्र में एक ही संकल्पना या सिद्धांत के लिए एक ही शब्द होता है ।

सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त शब्द सामान्य कहलाते हैं ।[2] ऐसे शब्दों का प्रयोग

---

1. हिन्दी शब्द रचना – डॉ. माई दयाल जैन – पृ. २४१
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. माधव सोनटक्के – पृ. १

समाज में सामान्य व्यवहार विषयक बातों की अभिव्यक्ति के सामान्य रूप से होता है । हर भाषा की सामान्य अभिव्यक्ति के मूल आधार से ही शब्द होते हैं । इनमें भाषा के सारे सर्वनाम तथा सामान्य जीवन से संबन्ध बहुप्रयुक्त संज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण आदि आते हैं । सामान्यतः कोई व्यक्ति जब कोई भाषा सीखता है तो पहले इन्हीं शब्दों को सीखता है । ऐसे शब्दों का प्रयोग हम अपने सामान्य जीवन को चलाने के लिए करते हैं, किन्तु पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्द को कहते हैं; जो सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे - रसायन, भौतिकी वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, अलंकार शास्त्र, गणित, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र इत्यादि के होते हैं । शास्त्र विशेष में इनका एक विशिष्ट और निश्चित अर्थ होता है, इसीलिए विषय विशेष में इनकी सहायता से निश्चित, स्पष्ट और अपेक्षित अभिव्यक्ति होती है ।[1]

डॉ. दंगल झाल्टे भी कहते हैं कि "सामान्य शब्दों का संबन्ध जीवन और जगत के दैनंदिन या सामान्य व्यवहार तथा बोलचाल आदि से है अर्थात् ऐसे शब्दों का प्रयोग रोजमर्रा के सामान्य व्यवहार विषयक बातों की सहज अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है ।"[2]

उपर्युक्त कथनों के अनुसार व्यक्त है कि एक व्यक्ति अपने नित्य व्यवहार में उपयोग करने वाले शब्द सामान्य शब्द कहते हैं । लेकिन पारिभाषिक शब्दों के अंतर्गत प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर, जन संचार माध्यम, कार्यालय, प्रशासन इत्यादि क्षेत्र आते हैं । पारिभाषिक शब्दावली अधिकतर प्रौद्योगिकी, दूरसंचार क्षेत्रों में आवश्यक हो रहा है ।

---

1. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी – पृ. २१५
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. दंगल झाल्टे – पृ. ७८

१.१.३ पारिभाषिक शब्दावली का मूल अर्थ

डॉ. दंगल झाल्टे[1] के अनुसार पारिभाषिक शब्द अंग्रेज़ी के टेक्निकल शब्द का हिन्दी पर्याय है । मूल अंग्रेज़ी शब्द Technical ग्रीक भाषा के Technikoi अर्थात् कला या कला-विषयक (Of Art) से गृहीन है । Techne का अर्थ है कला तथा शिल्प । ग्रीक भाषा में Tekton शब्द का अर्थ निर्माण करनेवाला (निर्माता) या बढ़ई के रूप में स्वीकारा गया है । लैटिन भाषा में Texere का अर्थ है 'बुनना या बनाना' । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तकनीकी शब्द वह शब्द है जो किसी निर्मित अथवा खोजी गई वस्तु अथवा विचार को व्यक्त करता हो । अंग्रेज़ी में पारिभाषिक शब्दावली के लिए 'टेकनिकल टर्मिनोलॉजी' (Technical Terminology) शब्द का प्रयोग किया जाता है । इसी तर्क पर कुछ विद्वान इसे तकनीकी शब्दावली कहते हैं । डॉ. सत्यव्रत ने लिखा है – तकनीकी या टेक्नीकल शब्दों के पीछे जो भाव छिपा है, उससे ज्ञात होता है कि ये वे शब्द हैं, जिन्हें केवल भौतिकी, रसायनिक या यांत्रिक विज्ञान-संबन्धी शाखाओं के विशेषज्ञ ही प्रयुक्त करते हैं । परन्तु आजकल इन शब्दों की आवश्यकता व माँग विशेषज्ञों की सीमा तोड़कर साधारण बोलचाल, दैनिक व्यवहार, औपचारिक लिखा-पढ़ी व विचार विनिमय के लिए भी बढ़ती जा रही है । वैज्ञानिक उन्नति के साथ-साथ दैनिक जीवन में नई-नई वस्तुएँ, क्रियाएँ, विचार, भावनाएँ तथा नियमादि का तेज़ी से प्रवेश हो रहा है अतः इसके द्योतक सभी नवीन शब्दों के लिए हिन्दी में 'पारिभाषिक शब्द' स्वीकार किया गया है ।

पारिभाषिक शब्द का शाब्दिक अर्थ है[2] – Of a particular art, science,

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. दंगल झाल्टे – पृ. ७८
2. प्रयोजन मूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे – पृ. १४०

craft or about art अर्थात् विशेष कला का अथवा विज्ञान का अथवा कला के बारे में । इसका प्रयोग skill (विशिष्ट कला) के अर्थ में भी किया जाता है । इस तरह कहा जा सकता है कि पारिभाषिक शब्द वह शब्द है जो किसी विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित निर्धारित अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

१.१.४ पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा

विद्वानों ने पारिभाषिक शब्दावली को अपने-अपने ढंग से उचित रूप से परिभाषित करने की कोशिश की है । कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ इस प्रकार है – चेम्बर्स टेक्निकल डिक्शनरी में पारिभाषिक शब्द को इस प्रकार रूपायित किया गया है – "Technical terms in symbol adopted or inverted by special and technicial to facilitate the precise recording ideas" अर्थात् पारिभाषिक शब्दावली वस्तुतः विशेषज्ञों एवं तकनीकी-विदों के अपने विशेष विचारों को लिपिबद्ध करने के लिए ग्रहण, अनुकूलन तथा निर्माण के द्वारा तैयार किए जाने वाले प्रतीक है ।[1]

उपर्युक्त परिभाषा से ज्ञात होता है कि पारिभाषिक शब्दावली ग्रहण, अनुकूलन और निर्माण द्वारा संभव होता है । आवश्यकता के अनुसार या शब्दों के अभाव से निर्माण प्रक्रिया द्वारा शब्द बनें । तो शब्दों की कमी नहीं होती है । किसी अन्य भाषा के संपर्क से अनुकूलन, ग्रहण कार्य भी चलते है ।

रेण्डम हाऊस ने पारिभाषिक शब्द की परिभाषा इन शब्दों में दी है – "A word

---

1. Chambers Technical Dictionary -- Page 48

of phrase used in some particular subject as a science or art a technical empression (more fully term of art) "[1]

"विशिष्ट विषय जैसे विज्ञान अथवा कला विषय की तकनीकी अभिव्यक्ति के लिए निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त एक शब्द अधिकांशतः कला का शब्द ।" यहाँ बताया गया है कि जो शब्द विज्ञान व कला के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट या निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं । अर्थात् सामान्य व्यवहार के लिए प्रयुक्त न होते हैं ।

अभिनव पाणिनि डॉ. रघुवीर ने पारिभाषिक शब्द की परिभाषा देते हुए लिखा है – "पारिभाषिक शब्द किसको कहते हैं, जिनकी परिभाषा की गई हो । पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हों । जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती हैं वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती वे साधारण शब्द होते हैं ।"[2]

स्पष्ट है कि पारिभाषिक शब्द परिभाषित होता है । पारिभाषिक शब्द और साधारण शब्द की भिन्नता यहाँ व्यक्त है । साधारण शब्द के लिए कोई सीमा नहीं होती है । पारिभाषिक शब्द में अर्थ एक ही है साधारण शब्द में अर्थ की एकरूपता का होना अनिवार्य थी । संदर्भ, प्रयोजन आदि के आधार पर अर्थ में भिन्नता हो सकती है ।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने पारिभाषिक शब्द के स्वरूप को इस प्रकार व्यक्त किया है – "पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो रसायन, भौतिकी, दर्शन, राजनीति आदि

---

1. रण्डम हाऊस : दी रैण्डम हाऊस डिक्शनरी ऑफ दी इंग्लिश लैंगेज – पृ. १५०५
2. कम्प्रेहेंसिव डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश-हिन्दी – डॉ. रघुवीर

विभिन्न विज्ञानों या शास्त्रों के शब्द होते हैं तथा जो अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप परिभाषित होते हैं । अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से परिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते है ।"[1]

तिवारीजी का मत हमें यह समझाते हैं कि पारिभाषिक शब्द विज्ञान या शास्त्रों से मिले-जुले है । अर्थात् साधारण शब्द नहीं है । पारिभाषिक शब्द विज्ञान या शास्त्र के अपने अपने क्षेत्र में सुनिश्चित तथा विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करते हैं । इनका अर्थ और कार्यक्षेत्र सीमित है, इन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं ।

डॉ. माई दयाल जैन के विचार से पारिभाषिक शब्दों से अभिप्राय उन शब्दों से है, जो किसी विशेष विज्ञान, शिल्प विज्ञान, उद्योग, व्यवसाय, घरेलू दस्तकारी, रेल, तार-डाक, राजशासन, न्याय, साहित्य तथा कला आदि में किसी विशेष अर्थ को बनाते है ।[2]

अर्थात् हम दैनिक जीवन में हर विशिष्ट क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करते हैं । रसोई घर से लेकर दफतर या कारखाने तक इनका प्रयोग होता है । लेकिन वह शब्द जनसाधारण की भाषा से अलग है ।

डॉ. विनोद गोदरे लिखते हैं कि "किसी विशिष्ट ज्ञान शाखा की विशिष्ट अभिव्यक्ति के लिए सुनिश्चित विशिष्ट अर्थ को ही ध्वनित करता है । इसके अलावा उक्त संदर्भ में उसके लिए न तो किसी प्रकार के अर्थ भेद की गुंजाइश होती है और न किसी प्रकार के अनिश्चित का ही वह वाहक होता है । वह तो बस मीन की आँख के लक्ष्य का वेधी तथा साधक

---

1. पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी शब्द रचना – डॉ. माई दयाल जैन – पृ. २०६

होता है ।"[1]

प्रस्तुत कथन से तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्द विशिष्ट है । ज्ञान-विज्ञान के विशिष्ट शब्द निश्चित अर्थ प्रदान करते है । साधारण शब्द अनिश्चित और भिन्नार्थ वाले है । पारिभाषिक शब्द में स्थान अर्थ निश्चित होती है ।

डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा का विचार है कि "पारिभाषिक शब्दावली ही वह कच्चा माल है, जिससे कुछ भी बनाया जा सकता है । शिक्षा में, शासन में, विधि में चाहे कहीं भी हिन्दी का प्रयोग करना है, तो उपयुक्त शब्दावली होनी चाहिए और उसके अभाव में न तो कार्यालयों में कार्य हो सकता है न विश्वविद्यालयों में शिक्षा दी जा सकती है और न न्यायालयों में न्याय की व्यवस्था संभव है ।"[2]

पारिभाषिक शब्दों की कमी नहीं होगी, क्योंकि वह बनाये जानेवाली बात है । कामकाजी क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों का उपयोग अधिकतर होता है । इसलिए उपयुक्त या उचित शब्दावली का बनाव होना ज़रूरी है ।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के विचार विश्लेषण के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है कि पारिभाषिक शब्द विशिष्ट होते है, उन शब्दों के अर्थ सीमा, स्पष्टता, निश्चितार्थ, निश्चितत्व होते हैं, विशिष्ट क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से, सीमित अर्थ से, आसानी से, शुद्धता से प्रयोग में लाये, उसे पारिभाषिक शब्दावली कहलाती है ।

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे – पृ. ४३
2. राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान – डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा – पृ. ५०

१.१.५ पारिभाषिक शब्दावली का स्वरूप

पारिभाषिक शब्दावली के विविध आयामों के जानने के पहले या विश्लेषण करने के पहले उनके स्वरूप की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है । पारिभाषिक शब्द के स्वरूप का बोध उसके अर्थ, परिभाषा और गुण से होता है । परिभाषा के बारे में हमें कुछ जानकारी मिले हैं । विभिन्न विद्धानों की परिभाषाएँ बड़ी विस्तार से ही प्रतिपादित किया जा चुका है । आगे इसके अर्थ और गुण के बारे में अवलोकन करने की आवश्यकता है ।

१.१.५.१ पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ

पारिभाषिक शब्द का अंग्रेज़ी में शब्द-कोशीय अर्थ है - टैक्निकल टेर्म । हर कार्यक्षेत्र में पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त होते हैं । विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि के विशेष अर्थ वाले शब्दों को ही पारिभाषिक शब्दों के अर्थ में लिया जाता है, परन्तु विस्तृत अर्थ में पारिभाषिक शब्द हर कार्यक्षेत्र में प्रयुक्त होते हैं, क्योंकि आधुनिक दृष्टिकोण से सभी प्रकार के अध्ययनों में वैज्ञानिकता या शास्त्रीयता आ गई है और हर कार्यक्षेत्र और अध्ययन क्षेत्र के नाम के साथ शास्त्र या विज्ञान शब्द को प्रत्यय के रूप में जोड़ा जा रहा है । उदा : मनोविज्ञान (Psychology), समाजशास्त्र (Sociology), राजनैतिक विज्ञान (Political Science) आदि ।

अत: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से हर कार्यक्षेत्र में प्रयुक्त शब्दावली को भी एक प्रकार से पारिभाषिक शब्दावली का नाम दिया जा सकता है । अध्ययन क्षेत्र या शिक्षा क्षेत्र या कार्यक्षेत्र (discipline) जो भी हो, अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से पारिभाषिक होने के कारण, ये शब्द पारिभाषिक कहे जाते हैं ।

पारिभाषिक शब्द का अर्थ सुनिश्चित, सुबोध तथा स्पष्ट होना चाहिए । पारिभाषिक शब्दावली में भिन्नार्थ नहीं होगा । अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्द के उसी अर्थ में हिन्दी पारिभाषिक शब्द मिलते हैं । समय-समय पर उसका निर्माण कार्य भी हो रहा है ।

१.१.५.२ पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताएँ

सामान्य भाषा शब्दों की अपेक्षा पारिभाषिक शब्दों की प्रकृति तथा उनका उद्देश्य अलग होता है । इसलिए उनकी अपनी-अपनी अलग-सी विशेषता होती है । यद्यपि हर ज्ञान शाखा तथा हर विषय की अपनी अपनी विशेष पारिभाषिक शब्दावली होती है । परन्तु इन सभी की प्रकृतिगत विशेषताएँ समान होती हैं । प्रोफेसर आगस्टिना सेवारिन (साइंटिफिक एण्ड टेक्निकल ट्रांसलेशन एण्ड अदर अस्पक्टस ऑफ लैंग्वेज प्रोब्लम), डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ. सत्यव्रत आदि विद्वानों ने पारिभाषिक शब्दों की सामान्य विशेषताओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला है । उन लोगों ने पारिभाषिक शब्दावली की सामान्य विशेषताओं की ओर अपने-अपने ग्रन्थों में विस्तृत रूप से चर्चा की है । और अन्य लेखकों के लेखन में भी विस्तृत व्याख्या है । इन सभी के आधार पर पारिभाषिक शब्द की निम्नलिखित सामान्य विशेषताएँ होती है ।

- पारिभाषिक शब्द परिभाषित होता है । हर पारिभाषिक शब्द में किसी विशिष्ट भाव या संकल्पना का समावेश रहता है । इसलिए ऐसे शब्दों को उनकी संकल्पना के अनुसार व्याख्या देकर समझाया जाता है । उदाः साफ्टवेयर, घनत्व, तापीय (थर्मल) गुणांक, गठानांक, व्यतिक्रम, अन्तरिक्ष (स्पेस), वोलट, समीकरण (ईक्वेशन) आदि ।

- पारिभाषिक शब्द की पहली विशेषता उच्चारण की दृष्टि से उसका सरल होना है । प्रयोक्ता के लिए पारिभाषिक शब्द का उच्चारण सरल होना चाहिए ताकि उसे इसका प्रयोग करने

में किसी प्रकार की परेशानी का अनुभव न हो । अगर पारिभाषिक शब्द किसी अन्य भाषा से लिया जाए तो उसे 'अनुकूलन पद्धति' एकेडमी - अकादमी (ध्वनि की दृष्टि से ग्रहण भाषा के अनुकूल करना जैसे एकेडमी - अकादमी) से अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूल ढाल लेना चाहिए ताकि प्रयोक्ता उसका उच्चारण सरलता से कर सके किन्तु सुगमता तथा शुद्धता में प्राथमिकता शुद्धता को दी जानी चाहिए ।

- पारिभाषिक शब्द असामान्य और इस कारण कभी-कभी दुरूह होते हैं । ये सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होते । जैसे दर्शनशास्त्र के अद्वैत, कुंडलिनी, ईडा, पिंगला आदि शब्द, भौतिक विज्ञान के शब्द - अनुदान (रेसोनेन्स), विकिरण (रेडिएशन), जीवविज्ञान के शब्द कोशिका (सेल), आनुवंशिक (जेनिटिक), कम्प्यूटर-विज्ञान के व्यतिक्रम (डिफाल्ट), संकुक (कर्सर), संप्रतीक (कैरक्टर) ।

- पारिभाषिक शब्द की एक और विशेषता उसकी अपर्यायीता है । तात्पर्य यह है कि किसी एक क्षेत्र के विशिष्ट पारिभाषिक शब्द का स्थान अन्य कोई दूसरा शब्द नहीं ले सकता। उदाः अधिसूचना, अनुस्मारक, इश्यू गुणा-सूत्र, दशमलव, द्विपदनाम आदि के पर्यायवाची दूसरे शब्द नहीं दिए जा सकते ।

- पारिभाषिक शब्दों की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उनसे सरलतापूर्वक नए शब्दों को, नए विज्ञान के प्रस्फुटन के साथ ही, निर्माण किया जा सकता है । जैसे 'मानव' से मानवता, मानवीयता, मानविकी, मानकीकरण । 'कलन' से आकलन, परिकलन, समाकलन, 'संकलन' से परांकन, पृष्ठांकन, रेखांकन, सीमांकन और 'रूपान्तरण' से लिप्यंतरण, स्थानान्तरण, भाषान्तरण आदि ।

♦ पारिभाषिक शब्दों की एक विशेषता यह भी है कि ये शब्द विशिष्ट क्षेत्र में विशिष्ट किन्तु अलग अर्थ में प्रयुक्त होते है । जैसे 'कल्चर' शब्द मानविकी में संस्कृति के अर्थ में प्रयुक्त होता है किन्तु कृषि-विज्ञान में कल्चर में तात्पर्य कृषि से है । उदाहरणार्थ 'अक्वा-कल्चर' (जल-कृषि), 'सीरी कल्चर' (रेशमकीट पालन) आदि । इसी प्रकार, सैन्य विज्ञान में 'सेक्यूरिटी' शब्द का अर्थ है - सुरक्षा किन्तु बैंकिंग में 'सेक्युरिटी' शब्द 'प्रतिभूति' (जमानत) के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

♦ भाषा की सामान्य शब्दावली के समान पारिभाषिक शब्दावली का उद्‌भव और विकास समाज में स्वयं ही नहीं होता, क्योंकि पारिभाषिक शब्दावली कृत्रिम होती है । ग्रहण, अनुकूलन, संचयन और निर्माण इन चार प्रक्रिया द्वारा उसका निर्धारण होता है । सामान्य शब्दों का जनक-निर्धारक समाज होता है, परन्तु इस शब्दावली का निर्धारण भाषा-विशेषज्ञ करते हैं, जो शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया के साथ-साथ विशेष प्रकार के तकनीकी ज्ञात के भी विशेषज्ञ होते हैं । साथ ही इनके निर्माण में उन लोगों का भी योगदान होता है, जो ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में क्रियात्मक या रचनात्मक कार्य करते हैं । कृत्रिम शब्द होने के कारण इनमें वह लचीलापन नहीं होता, जो सामान्य शब्दों में होता है । इनका निर्माण एक विशेष प्रक्रिया के तहत होता है ।[1]

♦ नियतार्थता तथा परस्पर अपवर्जिता पारिभाषिक शब्द की दूसरी विशेषता है अर्थात् पारिभाषिक शब्द का अर्थ सुनिश्चित, नियत, सुबोध तथा स्पष्ट होना चाहिए । उसे अर्थ संकोच अथवा अर्थ विस्तार दोष से मुक्त होना चाहिए । पारिभाषिक शब्द को अपनी अर्थ परिधि से अधिक या कम अर्थ अभिव्यक्त नहीं करना चाहिए ।[2]

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. माधव सोनटक्के
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे

- पारिभाषिक शब्द अल्पाक्षर होना चाहिए । वह शब्द यथासंभव एक ही मूल शब्द से निर्मित होना चाहिए । हर शब्द को स्वतंत्र तथा अलग होना चाहिए ।

- पारिभाषिक शब्दावली में संक्षिप्तता के साथ-साथ सांकेतिकता को भी एक ज़रूरी गुण मानना चाहिए ताकि भाषा के नूतन संकेत वैज्ञानिक प्रगति को रेखांकित कर सकें ।

१.१.५.३ पारिभाषिक शब्दावली के निर्धारण पद्धतियाँ

पारिभाषिक शब्दों की माँग एवं आवश्यकता बढ़ रहने के कारण इसकी पूर्ति करना भी आवश्यक है । ज्ञान विज्ञान के नये नये शब्द के निर्धारण अथवा निश्चयन के लिए भाषा विद्वानों ने चार पद्धतियाँ अपनायी है । वे पद्धतियाँ निम्न-लिखित प्रकार का है –

(१) ग्रहण

(२) अनुकूलन

(३) संचयन

(४) निर्माण

१.१.५.३.१ ग्रहण (Principle of Adaptation)

ग्रहण या Principle of Adaptation, इसके द्वारा पारिभाषिक शब्द ग्रहण किया जाए । अर्थात् अन्य विदेशी-भाषा से गहरा संबन्ध हो, तो पारिभाषिक शब्द का ग्रहण कर लेने का सुझाव है । आज का युग ही तकनीकी तथा वैज्ञानिक का है, इसके लिए अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्दावली को अपनाये बिना काम नहीं चल सकता । क्योंकि तकनीकी और वैज्ञानिक विकास पश्चिमी देशों में हो रहा है । यह स्पष्ट है कि हम विदेशी शब्दों का ग्रहण करें । हिन्दी और भारतीय भाषाओं की पारिभाषिक शब्दावली को शब्द ग्रहण करने पडे हैं, वह शब्द हिन्दी के ही

बने शब्द के रूप में है । अतः यह कहा जा सकता है कि बहुप्रचलित तथा आवश्यक शब्दों के रूप में ही विदेशी भाषा से शब्द ग्रहण किये जाना उचित होगा ।

उदा :- मोटर, टिकट, स्टेशन, पेट्रोल, कार, रेडियो आदि ।

इसे 'उद्धृत शब्दावली'[1] भी कहा जाता है । उक्त कहा गया है कि इस प्रक्रिया के अंतर्गत विशेष रूप से यूरोपीय भाषाओं में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लेने का सुझाव है । इसके पक्ष में निम्नलिखित तर्क है –

(१) इससे नई पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के पीछे होनेवाला श्रम, समय तथा संपत्ति का व्यय बच जाएगा ।

(२) अंग्रेज़ी की पारिभाषिक शब्दावली अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली है । अतः इसे अपनाने से वैज्ञानिक, औद्योगिक तथा प्राविधिक क्षेत्रों में समस्त विश्व के सहज ही हमारा संवाद तथा संबन्ध स्थापित हो सकेगा । इससे इन क्षेत्रों में हमारा विकास द्रुततर हो सकेगा ।

इन दो लाभों पर ज़ोर देकर इस देश का एक बहुत बडा पढ़ा-लिखा वर्ग अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के ग्रहण पर ज़ोर देता है । परन्तु गहराई से सोचने पर उनके तर्क बडे निष्प्रभ तथा अज्ञातजन्य दिखाई देते हैं । अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली ग्रहण करने के पूर्व इस अंतर्राष्ट्रीय शब्द समझ लें । विदेश में अंतर्राष्ट्रीय का मतलब उस शब्दावली से है जो यूरोप के कम से कम तीन देशों में प्रचलित हो । वस्तुतः उसे अंतर्राष्ट्रीय न कहकर यूरोपीय शब्दावली कही जानी चाहिए । यही कारण है कि स्वयं वहाँ के विचारकों, वैज्ञानिकों ने इस शब्द प्रयोग

---

1. बंबई विद्यापीठ रजत जयंती ग्रंथ – हरिमोहन राय सक्सेना – पृ. ८९

के खिलाफ आवाज़ बुलन्द की है । 'साइंस न्यूज सर्विस' के बिडबीज़न ऑफ इण्टर लिग्वा के अध्यक्ष के सुझाव है कि "रसायन और आधुनिक विज्ञान की अन्य शाखाओं की पारिभाषिक शब्दावलियों के प्रसंग में हम जिस 'अंतर्राष्ट्रीय' संज्ञा का प्रयोग करते है, उसे बदलकर या तो प्रामाणिक यूरोपीय भाषा कर देना चाहिए या फिर उसका आशय सदैव इसी पर्याय के अनुसार समझा जाना चाहिए ।"[1]

(३) तथाकथित अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को मान्यता प्रदान करवाने के लिए प्रयत्नशील विद्धानों का यह भी मत है कि अन्य अनेक देशों ने इसे स्वीकार कर लिया है, परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि इस पारिभाषिक शब्दावली को स्वीकार करनेवाली भाषाओं में न नये शब्द के निर्माण करने की शक्ति ही है और न इनकी भाषा में विभिन्न अनुशासनों के लिए विभिन्न ठोस एकार्थ विशेष की साधिका पारिभाषिक शब्दावली है । विश्व में संस्कृत, लैटिन, ग्रीक तथा चीनी ये ही चार भाषाएँ पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में पूर्णतया सक्षम है । यही कारण है कि तुर्की अंग्रेज़ी की अन्तर्राष्ट्रीय प्राविधिक शब्दावली स्वीकार कर लेती है किन्तु चीनी भाषा इसकी ओर फटकती भी नहीं है। अतः नवीन पारिभाषिक शब्द संरचना की प्रक्रिया में ग्रहण तत्व के बहाने योरोपीय शब्दावली की अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली के नाम से भारतीय भाषाओं में घुसपैठ अनुचित कही जाएगी । किन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि हम संपूर्णतया विदेशी शब्दों को अस्वीकार कर उनके स्थान पर अपनी भाषा के नये-नये शब्दों का निर्माण करें । जहाँ तक विदेशी शब्दावली में व्यक्ति के नामों के आधार पर बनाये गए शब्द हैं उन्हें स्वीकार कर लेना चाहिए जैसे – भारतीय वैज्ञानिक सत्येन्द्र बोस के नाम पर गढ़ा गया शब्द बोसोन । हमें ऐसे शब्दों को भी स्वीकार कर लेना चाहिए जो एक लंबे अर्से से हमारी भाषा में धुलमिल गए हैं ।

---

1. General of Chemical Education, March 1953

इसी प्रकार सांस्कृतिक आदान-प्रदान, व्यापार अथवा शासन आदि विभिन्न कारणों से जो शब्द हमारी भाषा में चले आये हैं उन्हें भी स्वीकार कर लेना चाहिए, जैसे – पेट्रोल, कार, रेडियो आदि । मगर इस स्वीकार में हमारा भाषा-दारिद्र्य अथवा हीनता प्रकट नहीं होनी चाहिए । इतना अवश्य है कि यदि इन शब्दों के स्थान पर देशी पर्याय उपलब्ध व प्रचलित हो तो उन्हें विदेशी शब्दों की तुलन में अंगीकार करना चाहिए ।[1]

१.१.५.३.२ अनुकूलन (Adaptation)

अनुकूलन या Adaptation, विदेशी भाषा को अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूलन रूप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है अनुकूलन । अर्थात्, जब विदेशी शब्दावली को अपनी भाषा की ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणात्मक विशेषताओं के अनुकूल परिवर्तित कर अपनी भाषा में शामिल कर लिया जाता है तब, इस प्रक्रिया को 'अनूकूलन' कहते है । यह प्रक्रिया दो प्रकार से संपन्न की जाती है । पहली किसी शब्द की विदेशी ध्वनि को अपनी भाषा की ध्वनि पद्धति में ढाल लेना, जैसे – विदेशी एंजिन भारतीय इंजन हो गया । इसे दो भाषाओं का समासीकरण अथवा संधीकरण भी कहते है । इसमें विदेशी शब्द को नाम धातु मानकर अपने व्याकरण के सहयोग से उसे नया रूप प्रदान किया जाता है । जैसे Appelate से अपीलीय ।

ध्वन्यानुकूलन के कुछ उदा :-

Technique से तकनीकी

Academy से अकादमी

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे – पृ. १४८

Chaina से चीन

Classical – क्लॉसिकल

Bank – बैंक

January – जानवरी आदि ।

शब्दानुकूलन के कुछ उदा :-

Voltage – वोलटता

Carbonisation – कार्बनीकरण

अनुकूल में अंतर्राष्ट्रीय या विदेशी शब्दों यथा कथित स्वीकारा नहीं जा सकता, अर्थात् उन्हें अनुकूलन करके बनाया जाता है । अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों को थोडा परिवर्तन करके (जो ध्वन्यानुकूलन हों, या शब्दानुकूलन हों) अनुकूलन बनाने की प्रयास सराहनीय है । वह बिलकुल एक सृजनात्मक प्रक्रिया है, यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय शब्द का भारतीकरण कर रहा है । उपर्युक्त उदाहरण सरलीकृत अनुकूल को व्यक्त करते हैं ।

१.१.५.३.३ संचयन

पारिभाषिक शब्दावली निश्चयन की तीसरी प्रक्रिया 'संचयन' कहलाती है । इसके अंतर्गत भारतीय भाषाओं, उपभाषाओं तथा बोलियों के उपयुक्त अछूत शब्दों का पारिभाषिक रूप में संचय व प्रयोग किया जाना चाहिए । यानी अपनी भाषा के प्रचलित शब्दों में से उपयुक्त शब्दों को पारिभाषिक शब्दों के रूप में अपनाकर उसके चयन तथा प्रयोग की प्रक्रिया को 'संचयन' कहलायी जाती है ।

१.१.५.३.४ निर्माण

पारिभाषिक शब्दावली निर्धारण की यह सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है । धातू,

प्रत्यय, उपसर्ग, संस्कृत, संधि द्वारा जो नये-नये शब्द की रचना करना निर्माण प्रक्रिया कहलाती है । छह सौ ज्ञान-विज्ञान शाखाओं के लाखों में प्रयुक्त मौलिक तथा व्युत्पादित शब्दों के लिए हिन्दी की अपनी पारिभाषिक शब्दावली आवश्यक है क्योंकि विदेशी शब्दावली से शब्द-निर्माण की प्रक्रिया बाधित हो जाती है और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पारिभाषिक शब्दावली अपनी भाषा की शब्द संपदा का महत्वपूर्ण हिस्सा होती है तथा उसे भाषा के व्याकरण के अनुकूल ढालना पड़ता है और विदेशी शब्दावली को व्याकरणानुकूल बनाना हमेशा संभव नहीं होता । पारिभाषिक शब्दावली के निर्धारण की पहली तीनों प्रक्रियाएँ सहज है परन्तु उनसे पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकती । उसकी पूर्ति निर्माण से ही संभव है । पद्धति निर्माण उतनी सरल नहीं है । यह सिर्फ चीनी, ग्रीक, लैटिन तथा संस्कृत में संभव है । धातु, उपसर्ग एवं प्रत्यय ऐसे महत्वपूर्ण तत्व हैं जिनसे शब्द निर्माण की प्रक्रिया चलती है । इस तरह से जिन शब्दों का निर्माण होता है उसमें से एक तो वे शब्द होते हैं जिनमें पारिभाषिक ध्वनि संकेत होते हैं जिन्हें नाम कहा जाता है और दूसरे शब्द व्यापार या कार्य के प्रतीक होते हैं इन्हें आख्यात (क्रिया) कहा जाता है । पारिभाषिक शब्दावली के लिए हमें उपर्युक्त दोनों प्रकार के शब्दों का निर्माण करना पड़ता है क्योंकि प्रत्येक विज्ञान में तथ्यान्वेषण तथा कार्यानुसंधान की प्रक्रियाएँ होती हैं । प्रत्येक भाषा की मूल धातु में अर्थ का बीज समाया रहता है और जब विज्ञान की नई शोधों, पदार्थ के गुणों और व्यापारों का द्योतन करती हैं तब भाषा अपनी मूल धातु के साथ प्रस्तुत होकर उपसर्गों तथा प्रत्यय के द्वारा उनको उद्‌घाटित करती है । जैसे वच् धातु में प्रत्यय व उपसर्ग लगा कर बने विभिन्न संज्ञा शब्द ।

प्रत्यय = वचन, वाचा, वाचार

उपसर्ग = प्रवचन, सुवचन, निर्वाचन

आगे और एक उदाहरण देखिए

पत्र – letter

विपत्र – bill

पत्रकार – Reporter

संधि द्वारा –

निदेश + आलय – निदेशालय – Directorate

राज्य + पाल – राज्यपाल – Governor

घोषणा + पत्र – घोषणापत्र – Manifesto

पद + उन्नति – पदोन्नति – Probation

विख्यात पारिभाषिक शब्द निर्माता डॉ. डी.एस. कोठारी ने पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के तीन बुनियादी सिद्धांत बतलाए हैं – १. उपयोगिता २. सरलता तथा ३. लचकीलापन । जहाँ तक पहले दो सिद्धांतों का प्रश्न है वहाँ मतभेद की गुंजाइश नहीं है परन्तु तीसरा शब्द लचकीलापन का प्रयोग भ्रामक है । अगर इससे उनका तात्पर्य शब्द की नमनीयता तथा विभिन्न संदर्भ में विभिन्न अर्थों का संकेतक होना है तो पारिभाषिक शब्दावली के लिए यह सिद्धांत मारक और घातक है । कारण कि पारिभाषिक शब्दावली की पहली विशेषता उसकी एकार्थता है । मगर अगर नमनीयता क अर्थ नये ज्ञान-विज्ञान के लिए नई अभिव्यक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करना हो तो यह सिद्धांत भी स्वीकार्य है ।

पारिभाषिक शब्दावली की निर्धारण की पहली तीनों प्रक्रियाएँ सहज हैं, परन्तु उनसे पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकती । उनकी पूर्ति निर्माण से ही संभव है । इस निर्माण के संदर्भ में सुप्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. रघुवीर ने कुछ मुख्य सिद्धांत बताए हैं ।

(१) प्रत्येक मुख्य अर्थ के लिए एक पृथक शब्द हो । जैसे –

रिपोर्टिंग (Reporting) के लिए प्रतिवेदन

पावर (Power) के लिए शक्ति

फोर्स (Force) के लिए बल

एनर्जी (Energy) के लिए ऊर्जा

(२) प्रत्येक शब्द अन्वर्थ अर्थात् अर्थानुगामी हो । जैसे स्थानान्तरण की माप या स्पीड के लिए 'गति' और स्थानान्तरण की प्रवृत्ति के लिए 'चाल' ।

(३) असमस्त पदों का पर्यायवाची शब्द चार अक्षरों से अधिक नहीं होना चाहिए । जैसे – अथारिटी के लिए 'प्राधिकार', Phosphorus के लिए 'भास्वर' ।

(४) योरोपीय शब्दों के विभिन्न प्रतीकों एवं संक्षेपों के पर्यायवाची भारतीय शब्द भी विभिन्न प्रतीकों एवं संक्षेपवाले हों । गणित, रसायन एवं भौतिक शास्त्र में आनेवाले संक्षेप एवं प्रतीक (चिह्न) ।

(५) योरोपीय असमस्त पदों का अनुवाद असमस्त पदों से किया जाए, अर्थात् पर्यायवाची शब्द व्याख्यात्मक न हो, जैसे सिग्नल के लिए अग्निरथगमनागम शब्द व्याख्यात्मक एवं दुरूह है । उसके बदल संकेतक शब्द सही एवं सटीक लगता है ।

(६) यथासंभव उपसर्गों का अनुवाद उपसर्गों से और प्रत्ययों का अनुवाद प्रत्ययों से करना है । जैसे –

१. प्रत्यय Phosph से ate, ated, atic, atcle, ation, ide, in, inic, onic आदि प्रत्यय एक-एक, दो-दो बार लगते है । Phosph का अनुवाद भास्व, ate का ईय, Phosphate - भास्वीय।

Ated - इयित = Phosphatid भास्वीयि

Atic - इयिक	=	Phosphatic	भास्वीयि
Atido - हयेय	=	Phosphation	भास्वीयेय
Ation - हयन	=	Phosphation	भास्वीयेय
Ide - इय	=	Phosphide	भास्विन्
In - इन	=	Phosphin	भास्विन्
Inic - अयिक	=	Phosphinic	भास्वयिक
Onic - आयिक	=	Phosponic	भास्वायिक

२. उपसर्ग Peri के लिए परि

Peri - परि	=	Perimeter	परिमाप
Sub - अनु	=	Subgenus	अनुप्रजाति
Con - सं.	=	Condence	संघनन
Ab - अप	=	Ab-rade	अपघर्षण
Anti - प्रति	=	Antimeric	प्रतिखण्ड
En - सु	=	Eupepsia	सुपचन
Dys - दुस	=	Dyspnea	दुश्श्वसन

(७) यूरोपीय समस्त शब्दों का विश्लेषण द्वारा सार्थक अंगों के अनुवाद से भारतीय शब्दों का निर्माण किया जाना चाहिए । जैसे Centrifugal केन्द्रापग - केन्द्र से अपगमन करनेवाला - Centre - केन्द्र Fugae - अपग

(८) विदेशी शब्दों के एक शब्द से बने विभिन्न रूप एक ही शब्द से व्युत्पादित किए जाएँ, जैसे –

Law - विधि	Legislate - विधान
Lawful - विधिवत्	Legislative - विधायी
Legal - वैध	Legislator - विधायक
Illegal - अवैध	Legislatable - विधेयक
Lawless - विधिहीन	Legislature - विधायिनी
Lawlessness - विधिहीनता	Legislatorlai - विधायकीय

(९) प्रत्येक शब्द के व्याकरण व अर्थ संबन्धी समस्त या असमस्त सभी पदों का संग्रह करके ही अनुवाद किया जाना चाहिए, जैसे –

१. व्याकरण संबंधी

Acid	=	अम्ल
Acidic	=	अम्लिक
Acidiant	=	अम्लकर
Acidification	=	अम्लन
Acidifier	=	अम्लक

२. अर्थ संबंधी

Right	=	अधिकार
Authority	=	प्राधिकार
Prerogative	=	परमाधिकार
Privilege	=	विशेषाधिकार
Monopoly	=	एकाधिकार

(१०) वास्तविक शब्दों के संक्षिप्तीकरण के साथ नये विचारों के लिए नये प्रत्ययों का निर्माण करना चाहिए । अंग्रेज़ी में रसायन संबन्धी धातुवाची तत्वों के द्योतन के लिए 'uni' प्रत्यय प्रयुक्त होता है और उनके लिए भारतीय 'पारिभाषिक शब्दावली' - निर्माण में 'आतु' प्रत्यय का प्रयोग कर सकते हैं, जैसे –

Alumna - स्फटी

Aluminium - स्फट्यात

(११) नवीन शब्दों के निर्माण से पूर्व हमारी प्राचीन भाषाओं के ग्रंथों में तथा संस्कृत से प्रभावित अन्य देशों की भाषाओं में उपलब्ध शब्दों का अनुसंधान कर लेना चाहिए ।

(१२) प्रांतीय भाषाओं में उपलब्ध शब्द यदि पूर्वोक्त नियमों के आधार पर अधिक उपयुक्त जाँचे तो हिन्दी की अपेक्षा उन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जैसे 'वायरलेस' को हिन्दी में 'वितन्तु' कहा गया है । तेलुगु में 'वितन्तु' का अर्थ विधवा होता है । 'वायरलेस' को तेलुगू में 'निस्तन्ली' कहा गया है । अतः 'वितन्तु' की जगह 'निस्तन्ली' शब्द को स्वीकार कर लेना अधिक उचित है । तात्पर्य यह है कि ऐसे शब्दों को अखिल भारतीय पारिभाषिक शब्दावली में स्थान न दिया जाय, तो किसी क्षेत्रीय भाषा में अन्य अर्थ के सूचक हों ।

(१३) अंतिम सिद्धांत यह है कि इस पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग शास्त्रीय स्तर पर हो और जनसामान्य के व्यवहार में प्रयुक्त शब्द साथ-साथ चलते भी रहे तो कोई हानि नहीं है । शास्त्रीय शब्द सदैव जनसाधारण में धीरे-धीरे ही फैलते हैं ।

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के ये तेरह मूल सिद्धांत हैं और इस आधार पर

विश्व की प्रत्येक भाषा के शब्दों का भारतीय प्रतिरूप तैयार किया जा सकता है ।[1]

१.१.५.३.४.१ निर्माण की पाँच प्रक्रियाएँ

पूर्वोक्त तेरह मौलिक सिद्धांतों के आधार पर शब्द निर्माण के रूपार्थ निश्चय की पाँच प्रक्रियाएँ स्वीकार की गई हैं –

(१) धातु में प्रत्यय उपसर्ग लगाकर । जैसे –

प्रत्यय	Capacity	धारिता	(धू + णिनि + ता)
उपसर्ग	Acquisition	अभिग्रहण	(अभि + ग्रह + लणुट्)

(२) दो धातुओं को मिलाकर । जैसे –

Test-flying	जाँच-उडान

(३) सामासिक पद बनाकर । जैसे –

Surveying	-	सर्वेक्षण
Interview	-	साक्षात्कार

(४) निपात द्वारा या नामधातु बनाकर । जैसे –

Pressurised	-	दाविता
Oxidization	-	ओषीकरण

(५) यदृच्छा शब्दों के निर्माण । जैसे –

Roman Effect	रॉमन प्रभाव

---

1. बंबई हिन्दी विद्यापीठ रजत जयंती अंक – पृ. १००

इन पाँच प्रक्रियाओं द्वारा पूर्वोक्त तेरह सिद्धान्तों के आधार पर सभी पारिभाषिक शब्दों का भारतीकरण कर लिया जाना चाहिए ।

इन निर्मित शब्दों के लिए एक और सिद्धांत बनाया गया है कि जहाँ प्रत्ययों के आधार पर व्याकरण की दृष्टि से लिंग भेद करना आवश्यक हो उन शब्दों को छोड़कर सभी पारिभाषिक शब्दों को पुल्लिंगमान लिया जाना चाहिए ।[1]

१.१.६ पारिभाषिक शब्दावली का वर्गीकरण

पारिभाषिक शब्दावली के वर्गीकरण के लिए विद्वानों ने कई आधार सुझाए हैं । कुछ लोगों ने इस तरह के शब्दों को दो भागों में बाँटा है, तो कुछ ने तीन, तथा कुछ ने पाँच भेद स्वीकार किए हैं । कुछ प्रमुख वर्गीकरणों को नीचे दिया जा रहा है ।

(क) डॉ. राजेन्द्र लाल मित्र का वर्गीकरण :

डॉ. मित्र[2] ने पारिभाषिक शब्दावली के कुल छः भेद किए हैं ।

(१) कभी-कभी पारिभाषिक शब्द के रूप में व्यवहृत होने वाले सामान्य शब्द, जैसे – सिर, पेड, लोहा तथा ज्वर आदि ।

(२) प्रमुख रूप से मानविकी और सामाजिक क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले वे अर्ध पारिभाषिक शब्द, जिनका इस्तेमाल कभी सामान्य शब्द के रूप में होता है तो कभी पारिभाषिक रूप में ।

(३) ऐसे योगिरूढ़ शब्द, जिनका अस्तित्व अब नाममात्र के लिए रह गया है । इस प्रकार के

---

1. भारतीय राष्ट्रभाषा - सीमाएँ तथा समस्याएँ – डॉ. सत्यव्रत – पृ. ११६
2. A scheme for the rendering of European Scientific Terminology in the Vernaculars of India -- Rajendra Lal Mitra -- P. 107, Ed. 1877

शब्द कभी वस्तुओं के गुणों का द्योतन करते थे, जैसे – कुनैन, आक्सीजन इत्यादि ।

(४) वनस्पति विज्ञान तथा प्राणिविज्ञान में प्रयुक्त होने वाले द्विपदीय नाम, जो अब महज इनसे संबंधित 'वंश' और जाति का ही बोध कराते हैं ।

(५) अपना व्युत्पत्तिजनक अर्थ व्यक्त करने वाले तकनीकी शब्द इस श्रेणी में आते हैं, यथा – रवाकरण, अंकुरण आदि तथा

(६) इस अंतिम श्रेणी में वे शब्द आते हैं, जिनका मूल संबंध रसायन शास्त्र या रचना विज्ञान से होता है । इन्हें समस्तपदीय शब्द कहा जाता है । यहाँ एक या दोनों शब्द अपना व्युत्पत्ति परक अर्थ देता है, यथा– सल्फ्यूरिक अम्ल आदि ।

(ख) डॉ. भोलानाथ तिवारी का वर्गीकरण :

डॉ. तिवारी[1] ने पारिभाषिक शब्दावली को पाँच टुकडों में अधोलिखित रूप में बाँटा हैं । वे कहते भी हैं कि किसी भाषा के पारिभाषिक शब्दों को विभिन्न आधारों पर कई वर्गों में बाँटा जा सकता है –

(१) इतिहास के आधार पर –

(क) तत्सम जैसे अणु - molecule,

(ख) तद्भव (जैसे acknowledgement के लिए 'पावती'),

(ग) विदेशी (जैसे मीटर, विटैमिन),

(घ) देशज (जैसे silt के लिए भल) ।

---

1. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी – पृ. २१७-२१८

(२) प्रयोग के आधार पर –

(क) पूर्ण पारिभाषिक – इस वर्ग में वे शब्द आते हैं, जो केवल पारिभाषिक शब्द के रूप में ही विभिन्न शास्त्रों में प्रयुक्त होते हैं, जैसे – भाषा विज्ञान में ध्वनिग्राम, नाट्य शास्त्र में प्रकरी या गणित में दशमलव,

(ख) अर्थ पारिभाषिक या मध्यस्थ – इस वर्ग में वे शब्द आते हैं जो पारिभाषिक अर्थों में भीप्रयुक्त होते हैं तथा सामान्य अर्थ में भी । उदाहरण के लिए – 'अक्षर' । यह शब्द सामान्य भाषा में लिखित वर्ण या letter के लिए आता है, किन्तु भाषा विज्ञान में syllable के लिए । इसी तरह 'असंगति', अलंकार शास्त्र में एक विशिष्ट अलंकार का नाम है, अतः पारिभाषिक है, किन्तु सामान्य बातचीत में भी 'संगति न होने' के अर्थ में इसका प्रयोग होता है । 'आपत्ति' शब्द सामान्य शब्द के रूप में बातचीत में आता है और पारिभाषिक शब्द के रूप में कानून या विधि में,

(ग) सामान्य – उन शब्दों को कहते हैं,जो मूलतः सामान्य भाषा के सामान्य शब्द हैं, किन्तु प्रसंगतः विशिष्ट शास्त्रों या विज्ञानों में पारिभाषिक शब्द का भी अर्थ देते हैं। उदाहरण के लिए पलंग, कुर्सी, सोफा सामान्य शब्द हैं, किन्तु काष्ठकला में ये पारिभाषिक शब्द हैं । इसी तरह 'दाँत' चिकित्सा में पारिभाषिक शब्द है तो सामान्य भाषा में सामान्य शब्द है । 'ध्वनि' व्याकरण और भाषाशास्त्र में पारिभाषिक है, किन्तु मूलतः यह सामान्य भाषिक व्यवहार का सामान्य शब्द है ।

(३) सूक्ष्मता - स्थूलता के आधार पर – इस आधार पर पारिभाषिक शब्दों के दो वर्ग बनाए जा सकते हैं –

(क) संकल्पना बोधक (Conceptual) पारिभाषिक शब्द – जो विभिन्न प्रकार की संकल्पनाओं को व्यक्त करते हैं, जैसे – गणित (दशमलव, बिन्दु, समीकरण), भौतिक शास्त्र (गीत, अनुवाद ऊर्जा) । दर्शन शास्त्र (मुक्ति, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, सुखवाद), मनोविज्ञान (व्यक्तित्व, हीन ग्रंथि) आदि में प्रयुक्त होने वाले बहुत से पारिभाषिक शब्द,

(ख) वस्तु बोधक (Objective) पारिभाषिक शब्द – जो ठोस चीज़ों को व्यक्त करते हैं, जैसे – रसायन शास्त्र (कैलशियम, सोडियम, कार्बन, मूल तत्वों के नाम, मिश्र तत्वों के नाम), प्राणिशास्त्र (कोशिका, धमनी, जीवद्रव्य) या वनस्पति शास्त्र (जाइलम, फ्लोयम) में प्रयुक्त होने वाले बहुत से शब्द ।

(४) स्रोत के आधार पर – इस आधार पर शब्द मुख्यतः तीन प्रकार के हो सकते हैं ।

(क) भाषा में पहले प्रयुक्त शब्द – इस वर्ग में वे शब्द आते हैं, जो लक्ष्य भाषा में पहले से हों, जैसे - हिन्दी में जीव, चूना, नस, बिजली आदि । ऐसे शब्द शुद्ध पारिभाषिक (जैसे विशेषण) भी हो सकते हैं और ऐसे भी हो सकते हैं, जो मूलतः सामान्य हों, किन्तु शास्त्र विशेष में पारिभाषिक शब्द के रूप में भी प्रयुक्त होते हों, जैसे मुक्ति,

(ख) दूसरी भाषा से गृहित शब्द – ये शब्द भी मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं । एक तो वे प्रायः अपने मूल रूप में ही गृहीत कर लिए गए हों, जैसे – कार्बन, राडार, मीटर, लीटर, कैलशियम और दूसरे वे जो लक्ष्य भाषा की ध्वनि-व्यवस्था या ध्वनि-प्रकृति के अनुरूप अनुकूलित कर लिए गये हों, जैसे – Acdemy का अकादमी या interim का अंतरिम । हिन्दी में गृहीत पारिभाषिक शब्द तथाकथित अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्द, अंग्रज़ी पारिभाषिक शब्द,

संस्कृत पारिभाषिक शब्द या भारतीय भाषाओं एवं बोलियों के पारिभाषिक शब्द हो सकते हैं । हिन्दी की उर्दू शैली अरबी-फारसी से भी ऐसेशब्दों को लेती है ।

(ग) नवनिर्मित शब्द – कभी-कभी पहले वर्ग के अभाव में तथा दूसरे वर्ग के शब्द का किसी कारणवश ग्रहण न कर पाने की स्थिति में, लक्ष्य भाषा के अनुवादक के दो या अधिक शब्द धातु, उपसर्ग, प्रत्यय आदि की सहायता से नए शब्द गढ़ने पड़ते हैं । हिन्दी में विभिन्न विज्ञानों के लिए ऐसे काफी शब्द गढे गए हैं, जैसे – रूपग्राम (Morphene) , मंत्रिमंडल (Cabinet), मंत्रालय (Ministry), निदेशक (Director), कुलसचिव (Registrar), संपादकीय (Editorial) आदि ।

(५) विषय के आधार पर – विषय के आधार पर किसी भाषा के पारिभाषिक शब्दों के उतने भेद किए जा सकते हैं, जितने विशिष्ट विषय हैं, जैसे – रसायन शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दावली, भाषा-वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली या दर्शन शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दावली आदि । वस्तुतः इस अंतिम आधार पर पारिभाषिक शब्दों के कई सौ भेद हो सकते हैं । यों इस प्रसंग में यह भी उल्लेख्र हैं कि बहुत से ऐसे शब्द भी होते हैं, जो एक से अधिक ज्ञानों, विज्ञानों या शासत्रों में प्रयुक्त होते हैं, जैसे – 'धातु' धातू विज्ञान में भी आता है और भाषा विज्ञान में भी ।

(ग) डॉ. गोपालशर्मा का वर्गीकरण :

डॉ. गोपाल शर्मा[1] के अनुसार पारिभाषिक शब्द तीन तरह के होते हैं ।

---

1. समाज के विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन – डॉ. गोपाल शर्मा – पृ. १०

(१) पूर्ण पारिभाषिक

(२) मध्यस्थ

(३) सामान्य

(घ) डॉ. विनोद गोदरे का वर्गीकरण :

डॉ. विनोद गोदरे[1] ने पारिभाषिक शब्दावली को स्थूल से दो वर्गों में बाँटा है –

(१) पूर्ण पारिभषिक शब्दावली – जो विभिन्न अनुसंधानों में ज्ञान, विज्ञान शाखाओं में प्रयुक्त शब्दावली का स्थूल वाचक शब्दावली है ।

(२) अर्द्ध पारिभाषिक शब्दावली – जिसमें सामान्य शब्द संदर्भ विशेष में पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं । चूँकि सामान्यतः ये पारिभषिक शब्द नहीं होते, किन्तु कभी-कभार ही संदर्भ की आवश्यकता से पारिभाषिक बनते हैं अतः इन्हें पारिभाषिकोन्मुख सामान्य शब्द कहा जा सकता है । इन्हें अर्द्ध पारिभाषिक शब्द भी कहा जा सकता है ।

डॉ. दंगल झालटे का वर्गीकरण[2] –

प्रयुक्ति अथवा प्रयोग के आधार पर 'शब्द' के एक ओर तो बहुप्रयुक्त, अल्पप्रयुक्त तथा अप्रयुक्त आदि भेद किए जा सकते हैं, तथा दूसरी ओर सामान्य, अर्ध-पारिभाषिक तथा पारिभाषिक । परन्तु इस संदर्भ में मुख्यः शब्दों के तीन प्रमुख प्रकार या रूप माने जा सकते हैं –

१. सामान्य शब्द

२. अर्धपारिभाषिक शब्द

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे – पृ. १५९
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. दंगल झालटे– पृ. ७७-७९

३. पारिभाषिक शब्द

१. **सामान्य शब्द** – सामान्य शब्दों का सम्बन्ध जीवन और जगत् के दैनंदिन या सामान्य व्यवहार तथा बोलचाल आदि से है । अर्थात् ऐसे शब्दों का प्रयोग रोज़मर्रा के सामान्य व्यवहार विषयक बातों की सहज अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है । प्रत्येक भाषा की सर्वसामान्य अभिव्यंजना के मूलाधार ऐसे सामान्य शब्द ही माने जाते हैं और उनमें संबन्धित भाषा के सर्वनाम तथा सामान्य जीवन व जगत् से सम्बन्धित बहुप्रयुक्त क्रिया, संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया विशेषण आदि का समावेश रहता है । ऐसे सामान्य शब्दों के आधार पर ही कोई व्यक्ति भाषा सीखता है और उनका नित्य प्रति के व्यवहार में उपयोग भी करता है । बच्चा भी जब मातृभाषा सीखता है तब सर्वप्रथम सामान्य शब्दों को ही सीखता है । खाना, पीना, चलना, चाचा, माँ, पिता, आना, जाना, ठंडा, गरम, रोटी, पानी, कलम, मेज़, कुर्सी जैसे शब्द सामान्य शब्द की श्रेणी में आयेंगे। बोलचाल, वार्तालाप या संवाद तथा ललित साहित्य आदि में ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है । सरलता, भावुकता, लक्षणा-व्यंजनाश्रितता तथा सहजता आदि गुण सामान्य शब्दों में देखे जा सकते हैं । सामान्य शब्द पारिभाषिक शब्द के रूप में कभी प्रयोग में नहीं आते ।

२. **अर्धपारिभाषिक शब्द** – सामान्य शब्दों के अलावा कुछ ऐसे शब्द हैं जो सामान्य तथा पारिभाषिक दोनों रूपों में प्रयोग में लाये जाते हैं । अर्थात् कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनका प्रयोग स्थिति, विषय-वस्तु तथा संदर्भ के अनुसार कभी तो सामान्य शब्दों के रूप में होता है, और कभी पारिभाषिक शब्दों के रूप में ।

सामान्य शब्द को आसानी से पहचाना जा सकता है किन्तु अर्ध-पारिभाषिक शब्द को उसकी विशिष्टताओं तथा विशेष ज्ञान की स्पष्टताओं के द्वारा पहचाना जा सकता है । माया, विपदा, वेदना, क्रिया, सृजन, आपत्ति, रस, अर्थ आदि ऐसे अनेक शब्द हैं जो अर्ध-

पारिभाषिक शब्द-वर्ग में आते हैं । विश्व की भाषाओं में इस प्रकार के शब्दों की संख्या काफी मात्रा में विद्यमान रहती है ।

३. **पारिभाषिक शब्द** – पारिभाषिक शब्द को 'तकनीकी शब्द' भी कहा जाता है । वस्तुतः 'टेक्निकल टर्मिनालॉजी' के पर्याय के रूप में हिन्दी में 'पारिभाषिक शब्दावली' अथवा 'तकनीकी शब्दावली' का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है । विख्यात कोशकार डॉ. रघुवीर ने 'कम्प्रेहेन्सिव डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश-हिन्दी' में पारिभाषिक शब्द की व्याख्या देते हुए लिखा है – "पारिभाषिक शब्द किसको कहते है, जिसकी परिभाषा की गई । पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हों । जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती है वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती वे साधारण शब्द होते हैं ।" पारिभाषिक शब्दों का सम्बन्ध ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से है और उनकी परिधि निश्चित अर्थात् परिभाषित (Defined) रहती है तथा विषय-पल्लवन की प्रक्रिया में इनका विशिष्ट स्थान रहता है । ज्ञान विशेष में इन शब्दों का अर्थ होता है । अतः विषय-विशेष में इन शब्दों की सहायता से स्पष्ट तथा एकार्थक अभिव्यक्ति संभव होती है । अधिकांश पारिभाषिक शब्द अर्थ-संकोच से बनाये जाते है जो जटिल विचारों को सांकेतिक रूप में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं । विभिन्न प्रकार के विज्ञानी शास्त्रीय सिद्धान्तों का निरूपण करते हैं जिन्हें सर्वसामान्य बोलचाल की भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता । फलतः इस प्रकार की शास्त्रीय सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति हेतु विशिष्ट 'मानक' (Standard) शब्दों का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है । यही पारिभाषिक शब्द हैं और यहीं से पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो जाती है । पारिभाषिक शब्दों के अंतर्गत मानविकी, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कार्यालयी, प्रशासन, अंतरिक्ष, कंप्यूटर तथा दूरसंचार आदि क्षेत्र आते हैं ।